व्यवहार में तपस्या के मर्म को जानें

कई माँ अपने बच्चों पर प्रेशर बहुत रखती हैं। इतने नम्बर लाने ही हैं। न बच्चे को टी.वी. देखने देती, न खेलने-कूदने देती। बस पढ़ो। चाय बना कर रख देती है रात में नींद आये तो चाहे चाय पी लेना। ऐसा कोई बुद्धिमान नहीं बना करता। हमारे घर में मेरी भतीजी है, उसकी माँ उसको डाटती थी- टी.वी. देखती है, पढ़ती नहीं है। लेकिन जब रिज़ल्ट आया तो उसने गोल्ड मेडल लिया था। बुद्धिमानों को रात-दिन पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती इसलिए माताएँ अपने बच्चों को उसकी बुद्धि का विकास करने के लिए उनपर दबाव न डालें, उन्हें खुला माहौल दें। घर में खुशी का माहौल बनायें।

अगर आपके घर में क्रोध है और सदा ही तनाव रहता है। वहाँ अपनेपन का निर्माण करेंगे। हमें उम्मीदें दूसरों से बहुत ज़्यादा रहती हैं। सम्बन्धों में आप चेक कर लें। हर व्यक्ति दूसरों से कुछ न कुछ डिमान्ड(मांग) कर रहा है। ये व्यक्ति मुझे सम्मान दे, ये व्यक्ति मेरी बात सुने, ये व्यक्ति मुझे आगे बढ़ाये। लेकिन आप ये सोच लें जिसे आप सम्मान मान रहे हैं उनका अपना स्वमान तो पहले ही समाप्त हो चुका है। जिनसे आप प्यार माँग रहे हैं उनके मटके पहले ही सुखे हुए हैं।

लेकिन ये ध्यान रखें कि जो दोगे तुम्हारे पास डबल होकर वापस आयेगा। सुख दो डबल होके तुम्हारे पास आयेगा। दूसरों को प्यार बाँटो तुम प्यार के भण्डार बन जाओगे। तुम्हें प्यार की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। सम्मान दो, सम्मान पाओगे। सहयोग दो 10 गुणा सहयोग प्राप्त होगा। लेकिन आजकल के समय में लोगों में सम्मान कम होता जाता है, और सहयोग की भावना तो बहुत कम हो गयी है। मैं सभी से कहूँगा अपने बुजुर्गों का बहुत सम्मान करें सभी। पसंद है? पसंद है? एक छोटी-सी कहानी हमारे यहाँ के अखबार में छपी। एक व्यक्ति अपने माँ-बाप से अच्छा व्यवहार नहीं करता था। दोनों बुजुर्ग हो गये थे। उनको एक अलग कमरा तो दिया हुआ था। मिट्टी के बर्तन रखे हुए थे, मिट्टी के बर्तनों में भोजन रख आते थे। ये सब इनका छोटा बच्चा देखता था। अचानक दोनों की मृत्यु हुई। दोनों की चिताएं जली। ये मिट्टी के बर्तन भी उनकी चिता के पास रख दिये। क्या होता है कि चिता को जैसे आग लगाई तो बच्चा दौड़ा और मिट्टी के बर्तन उठाकर ले आया तब उसके पिता ने उसको बहुत डाँटा कि ये क्या कर रहे हो? क्यों ला रहे हो? उसने चुपचाप थोड़ी आवाज़ से उत्तर दिया, ये आपके काम आयेंगे। जैसा व्यवहार हम दूसरों से करते हैं वैसा ही हमें प्राप्त होता है। यही सृष्टि और कर्मों का सिद्धान्त है। होता है कि नहीं ऐसा!

लेने की इच्छायें हमारे तपस्या के तेज को धुंधला कर देती है। अतः अच्छे साधक को इससे बचना चाहिए। अगर ऐसा कर पाये तो हमारे जीवन में आनंद और सन्तुष्टता समाहित हो जायेगी। तो तपस्या में हमें अपने को आनंदित करना है। आनंद प्राप्ति के लिए सूक्ष्म इच्छाओं का भी त्याग करना है।

ये अटल सिद्धान्त है कर्म का। इसको कोई टाल नहीं सकता, काट नहीं सकता। लेकिन ऐसा भी होता है कि कई बुजुर्ग लोग ज़्यादा गुस्सा करने लगते हैं। चिड़-चिड़ करते हैं, शांति नहीं रखते। कुछ बीमारीयां हो जाती हैं जिससे बच्चों को परेशानी होनी लगती है। कई बच्चे हमने देखे। अपने माँ-बाप को आँखों पर रखते हैं बुजुर्ग की स्थिति में भी। तो हम भारत की इस सुन्दर परम्परा की शुरूआत रखें।

पश्चिमी दुनिया में ये परम्परा नहीं है। पर हमारे भारत की सभ्यता की ये सुन्दरता है कि बच्चे यहाँ अपने माँ-बाप का सम्मान करते हैं। हम उनका आशीर्वाद भी लें। सम्मान केवल पैर छूने से नहीं हो जाता है लेकिन सम्मान एक दिल की भावना है। सभी अपने बुजुर्गों से परेशान नहीं होंगे। बहनें जो योग करती हैं वो अपने बच्चों को सम्भालें, योग करें या सास-ससुर की सम्भाल करें। उनके लिए भी कठिनाई होती है। लेकिन फिर भी अगर हमारी भावनाएं श्रेष्ठ होंगी तो हम ये करने में सक्षम हो जायेंगे। श्रीमद्भगवत गीता तो सारी निष्काम भाव पर लिखी गई है। आधी गीता में निष्काम कर्मयोग, निष्काम भाव का वर्णन है। आज लोग उसे भूल गये। केवल गीता का थोड़ा पाठ करते, आजकल तो वो भी नहीं रहा। लेकिन जो उसके मूल सिद्धान्तों पर ध्यान देते हैं कि हमें निष्काम भाव धारण करना है। आज कल की जो भाषा नो एक्सपेक्टेशन्स, यह इंग्लिश का शब्द है। श्रीमद्भगवत गीता पर बहुत विस्तार से कहा गया है कि अच्छा कर्म करो तो फल तुमको अच्छा मिलेगा ही लेकिन किसी की सेवा करो, किसी की मदद करो। मदद करो और भूल जाओ। रिटर्न में हमें कुछ मिलना चाहिए इसकी कामना न करें हम।

मैं बचपन से गीता का अध्ययन करता था। मुझे एक बात उसमें समझ नहीं आती थी। हे अर्जुन जब मनुष्य ये सोचता है कि ये-ये अच्छा काम करूँगा, ये-ये करूँगा, मैं दान करूँगा, मैं इतनों की सेवा करूँगा। ये भी रजो प्रधान कर्म है। मैं सोचता था इतने अच्छे-अच्छे कार्य, यज्ञ करूँगा, तप करूँगा, सेवा करूँगा, दान-पुण्य करूँगा- अगर ये कार्य तमोप्रधान कर्म है तो सतोप्रधान कर्म कौन-सा है..! मैं जब छोटा था तो सोचता था ऐसा। उत्तर तो मिलता नहीं था। जब यहाँ आये तो यहाँ उसकी सुन्दर व्याख्या प्राप्त हो गई। क्योंकि उसके पीछे ये भाव है कि मैं करूँगा। ठीक बात है ना! सूक्ष्म भाव है कि मैंने किया और मैं करूँगा। चाहे किसी तपस्वी को यही हो मैंने बहुत तप किया, ये भी मैं पन है। जो उसकी तपस्या के दिव्यता को लोप कर देता है। इसलिए हम सब श्रेष्ठ कर्म, कामनाओं से रहित होकर करें। ये नहीं कि हमने कोई अच्छा कार्य और ये भी संकल्प कर लिया कि लोगों को पता तो चले मैंने ये काम किया है। अगर कर्म करके उसके बदले में जो हमारा भाव कुछ पाने का है तो ये अच्छे साधक की निशानी नहीं है। हमें इनसे ऊपर उठकर आगे बढ़ना है। यही तपस्या फलीभूत होगी। और आपके अंतर्मन में खुशी और सन्तुष्टता दिलायेगी।

माउण्ट आबू-राज.। राज्यपाल कलराज मिश्र से मुलाकात कर ब्रह्माकुमारीज़ की गतिविधियों से परिचित कराते हुए ग्लोबल अस्पताल निदेशक ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढ़ा तथा ब्र.कु. प्रकाश भाई।

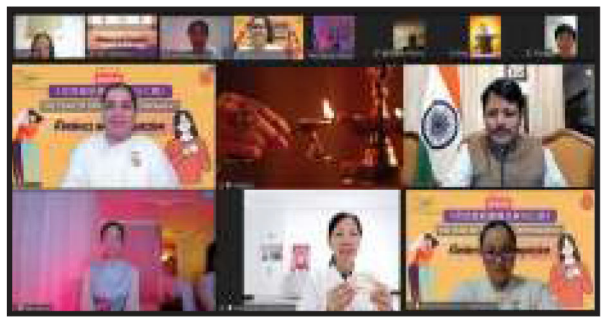

चाइना-गुआंगज़ौ। भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के उद्घाटन अवसर पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में शम्भू एल.हक्की,द कॉन्सल जनरल ऑफ इंडिया इन गुआंगज़ौ, ब्र.कु. सपना बहन तथा बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल रहे।

यू.एस.ए.-न्यू यॉर्क। द इंटरनेशनल अहिंसा फाउण्डेशन,ट्री-स्टेट एवं द इंडियन कॉन्सुलेट इन न्यू यॉर्क के संयुक्त तत्वाधान में महावीर जयंती एवं आज़ादी का अमृत महोत्सव भव्य रूप से मनाया गया। इस मौके पर डॉ. जैन, इंडियाज़ कॉन्सल जनरल इन न्यू यॉर्क रणधीर जायसवाल, कांग्रेसवुमेन कैरोलिन मालोने, कांग्रेसवुमेन ग्रेस मेंग, डीएनवाई पद्मश्री प्राप्त डॉ. सुधीर पारिख,चेयरमैन ऑफ पारिख वर्ल्डवाइड मीडिया एंड आईटीवी गोल्ड, प्रोफेसर ऑफ रिलीजन जेफरी लॉन्ग,एलिजाबेथटाउन कॉलेज,पेंसिलवेनिया, इज़राइल्स डिप्टी कॉन्सल जनरल इज़राइल निटज़न सहित अन्य गणमान्य अतिथि, ऑर्गनाइज़र्स तथा सम्मानित व्यक्ति उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से राजयोगिनी ब्र.कु. सबिता गीर ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई।

खजुराहो-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत यातायात प्रभाग द्वारा 'सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा' अभियान का शुभारंभ बमीठा उप सेवाकेन्द्र से हुआ। इस दौरान बमीठा थाना प्रभारी पंकज शर्मा, ग्राम खैरी के सरपंच सुनील पांडे, डॉ. महेंद्र तिवारी, खजुराहो सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन आदि ने सम्बोधित किया एवं सहयोगी रहे। मोटरसाइकिल यात्रा में 25 यात्रियों ने भाग लिया। इस मौके पर राजनगर के चाइल्ड एकेडमी हाई स्कूल के संचालक नितिन खरे, गायत्री विद्या मंदिर स्कूल के प्राचार्य नरेश नामदेव, जनक राजा पब्लिक हाई स्कूल के संचालक अर्जुन सिंह, माँ शारदा मेमोरियल स्कूल के प्राचार्य हर्ष पंकज दुबे, आर्यन पब्लिक स्कूल के संचालक महेश पटेल, साथिया के पियर एजुकेटर सचिन सिंह एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मुरैना-जीवाजी गंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत सेवाकेन्द्र पर समाजसेवियों के लिए आयोजित 'मानवता के संरक्षक' कार्यक्रम में 15 संगठनों के प्रमुखों ने भाग लिया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश शासन के आनंदम विभाग द्वारा नोडल ऑफिसर आर.के. तोमर, पूर्व सीएमएचओ डॉ. आर.सी. बांदेल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन, अबोध आश्रम की संचालिका अरुणा छारी, धरती संस्था के देवेंद्र भदोरिया तथा अन्य समाजसेवियों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

शांतिवन-आबू रोड। 'मीडिया ट्रेनिंग' प्रोग्राम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता दीदी, ज्ञानामृत पत्रिका के सम्पादक ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ओम शान्ति मीडिया पत्रिका के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर भाई, माउण्ट आबू के जन सम्पर्क अधिकारी ब्र.कु. कोमल भाई, ब्र.कु. कविता बहन तथा मीडिया जगत से जुड़ी हस्तियां।

बिलासपुर-छ.ग.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'सुरक्षित भारत सड़क सुरक्षा यात्रा' एवं 'दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के तहत छ.ग. राज्य विद्युत मण्डल के क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र के कल्याण भवन में आयोजित कार्यक्रम में टिकरापारा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, संजय पटेल,कार्यपालक निदेशक,बिलासपुर क्षेत्र, उपभोक्ता फोरम के अध्यक्ष भूषण लाल वर्मा, संदीप गुप्ता,मुख्य अभियंता,संचार एवं संधारण केन्द्र, सतीश दुबे,अधीक्षण यंत्री,बिलासपुर वृत्त, सी.एम. वाजपेयी,अधीक्षण यंत्री,कार्यालय, अमर चौधरी तथा अन्य सभी कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री, कनिष्ठ यंत्री, कार्यालय सहायक सहित सभी वर्ग के कर्मचारी गण उपस्थित रहे।